हमारा विश्वविद्यालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की स्थापना 18 जुलाई 1946 को डॉक्टर सर हरिसिंह गौर के द्वारा हुई। आरंभ में सागर विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध यह विश्वविद्यालय, 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम के कानून के द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय बन गया। वर्तमान में 11 संकायों और 37 विभागों से युक्त इस विश्वविद्यालय में एजुकेशनल मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर और मानव संसाधन विकास केन्द्र भी है। इसके अतिरिक्त एक बेहतरीन पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम और लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग छात्रावास की सुविधा है। विश्वविद्यालय परिसर में बैंक, डाकघर और अस्पताल की सुविधा भी है।

शोबा-ए-उर्दू एवं फारसी

मशहूर माहिर-ए-तालीम-ओ-कानून नाबग़ा-ए-रोज़गार डॉक्टर हरीसिंह गौर के यूनिवर्सिटी और शोबा-ए-उर्दू फारसी के क़याम का ख्वाब साथ-साथ शर्मिन्दा-ए-ताबीर हुआ। 18 जुलाई 1946 को यूनिवर्सिटी के दूसरे शोबों के साथ-साथ शोबा-ए-उर्दू व फारसी का भी क़याम अमल में आया। आज इसे पोस्ट ग्रेजुस्ट और तहकीक के आला मरकज़ के तौर पर जाना जाता है। ये मधप्रदेश की वाहिद मरकज़ी यूनिवर्सिटी है जिसमें उर्दू की आला तालीम-ओ-तहकीक का बेहतरीन नज़्म है। बी. एल. पाठक इसके बुनियाद गुज़ार सद्र-ए-शोबा थे। उनके बाद इस ज़िम्मेदारी को श्री वी. बी. अमर ने बख़ूबी निभाया और 1965 में जब डॉ. एम. एस. सिद्धीकी का बहेसियत असिस्टेंट प्रोफेसर कुल बक़्ती तकर्रुर अमल में आया तो वो इसके सद्र-ए-शोबा हुए और सद्र की जिम्मेदारी भी निभाते रहे। 1990 में डॉ. हाजिरा खातून सिद्धीकी और प्रो. फिदा-उल-मुस्तफा शोबे से वाबस्ता हुए। प्रो. फिदा-उल-मुस्तफा की सदारत में शोबे ने नई मंजिलें तय की। 2013 में शोबे की तौसीय हुई और चार नये असिस्टेंट प्रोफेसरों का कुलवक़्ती तकर्रुर अमल में आया। 2017 में प्रो. फिदा-उल-मुस्तफा के सुबकदोश होने के बाद प्रोफेसर निवेदिता मैत्रा की रहनुमाई में शोबा कामरानियों की नई मंजिलें तय कर रहा है।

सेमीनार : तआरुफ/मकासिद

बाज़ अहले नज़र का दावा है किह हर अदब अपने समाज का आइना है। यानी अदब और अदीब दोनों बराह-ए-रास्त समाजी ताम्मुल का मज़हर होते हैं। जैसे हालात होंगे उसी तरह का अदब तखलीक पाएगा। अदबी तारीख के बाज़ हिस्से इसके शाहिद हैं किह गैर मामूली हालात आला अदब का पेश खेमा साबित होते है। खारजी हालात अदीब के तखलीक़ी सरश्चमों और शऊर को झिंझोड़ते और सर करते है, नतीजतन अपने जज़्बात -ओ-महसूसात को तजुर्बात की रोशनी में लफ़्ज़ों का जामा पहनाता है और अपने कारेईन का बेहतरीन शाराह होने का फरीज़ा अनजाम देता है। ज़ाहिर है खारजी अवामिल य मुहर्रिकात किसी को बड़ा तख़लीक़ कार नहीं बनाते है बल्कि बड़ा तखलीकार लफ़्ज़ों के ख़ल्लाक़ाना इस्तेमाल पर ज़्यादा कुदरत रखाता है। उर्दू अदब की तख़लीक़ी तारीख इस हवाले से बड़ी सरवतमंद है। इसलिए किसी भी सिन्फ के तख़लीक़ कार की दर्जाबंदी और फ़ेहरिस्त साजी में अव्वलियत का मसला हमेशा मुतनाजा फीह रहा है। ग़ालिब बड़े हैं कि मीर, अनीस या दबीर, इन्तेज़ार हुसैन या कुर्रआतुल ऐन हेदर बहर केफ़ ये बहस आज भी अपनी मानवियत बरक़रार रखे हुए है, क्यों कि वक़्त और हालात की तबदीली के साथ साथ हैअत की तबदीली, नए अल्फ़ाज़ की तलाश, नए पैकर और नई अलामातों की खोज का आग़ाज़ होता है और तनक़ीद के नए पैमाने भी वज़ा होते हैं। बीसवीं सदी के निस्फ-ए-आख़िर में अदबी तजुर्बात के जो नित नए सिलसिले शुरू हुए थे, आज वही सिलसिले अदबी मंज़रनामे की तख़लीक़ -ओ-तशकील कर रहे है। फ़र्द या समाज की नफ़ी या इन दोनों को बुनियाद बनाकर बात करने की बहस आज भी वही मानवियत रखती है। इस सेमीनार के ज़रिये तख़लीक़-ओ-तनक़ीद के इन अवामिल और सरचश्मों का तज्ज़िया करने की कोशिश की जायेगी, जो तख़लीकात के मारिज़े वजूद में आने का सबब बनते है और मौजूदा अदबी मंज़रनामे की तशकील में बतौर मुहर्रिक सरगर्म रहते है। इस सेमीनार का एक फ़ायदा ये भी होगा कि दरसियात और रवां तख़लीकी सरोकार में जो ख़ाला है वो पुर हो सकेगा और अहले उर्दू क़दीम के साथ-साथ जदीद तख़लीकी सरोकार बिल्ख़ुसूस मौजूदा अदबी मंज़रनामे से वाक़िफ़ हो सकें।

ڈاکٹر ہری سنگھ گور سنٹرل یونیورسٹی : نابغہ روزگار، قانون ساز اسمبلی کے اہم رکن اور مشہور ماہر تعلیم وقانون ڈاکٹر ہری سنگھ گور نے 18/جولائی 1946 میں اپنے ذاتی خرچ سے ساگر یونیورسٹی کی بنیاد رکھی۔ بنیاد گذار وائس چانسلر کی حیثیت سے یونیورسٹی کی خدمت کرتے ہوئے انھوں نے اسے علم و ادب کا ایک اہم مرکز اور مرجع خلائق بنایا۔فطری خوبصورتی اور وسائل سے مالا مال اس وسیع وعریض ادارے کو 15/جنوری 2009 میں مرکزی یونیورسٹی کا درجہ ملا اور 2015 میں NAAC نے A گریڈ سے نوازا۔فی الحال یونیورسٹی میں گیارہ اسکول ہیں جن کے تحت 37 مختلف شعبے اپنی ذمہ داریاں نبھا رہے ہیں۔فروغ انسانی وسائل مرکز (UGC-HRDC) اور ایجوکیشنل ملٹی میڈیا ریسرچ سنٹر (EMMRC) بھی اس یونیورسٹی کے دوسرے محرک شعبے ہیں۔علمی، طبی اور دیگر ضروری سہولیات سے مزین یہ مرکزی یونیورسٹی قومی سطح پر اپنی منفرد شناخت رکھتی ہے۔

شعبۂ اردو وفارسی: ڈاکٹر ہری سنگھ گور کے یونیورسٹی اور شعبۂ اردو وفارسی کے قیام کا خواب ساتھ ساتھ شرمندہ تعبیر ہوا۔18/جولائی 1946 کو یونیورسٹی کے دوسرے شعبوں کے ساتھ ساتھ شعبۂ اردو و فارسی کا بھی قیام عمل میں آیا ۔شری بی۔ایل۔پاٹھک اس کے بنیاد گذار صدر شعبہ تھے۔ان کے بعد اس ذمہ داری کو شری وی۔بی۔امر نے بخوبی نبھایا اور 1960/میں جب ڈاکٹر ایم۔ایس۔صدیقی کا بحیثیت اسسٹنٹ پروفیسر کل وقتی تقرر عمل میں آیا تو وہ اس کے صدر شعبہ بھی مقرر ہوئے۔1990 تک شعبہ سے وابستہ رہے اور صدر کی ذمہ داری بھی نبھاتے رہے۔1990 میں ڈاکٹر ہاجرہ خاتون اور پروفیسر فداء المصطفیٰ شعبہ سے وابستہ ہوئے۔پروفیسر فداء المصطفیٰ کی صدارت میں شعبہ نے نئی منزلیں طے کیں۔2013 میں شعبہ کی توسیع ہوئی اور چار نئے اسسٹنٹ پروفیسروں کا کل وقتی تقرر عمل میں آیا۔2017 میں پروفیسر فداء المصطفیٰ کے سبک دوش ہونے کے بعد پروفیسر نویدیتا میترا کی صدارت ورہنمائی میں شعبہ کامرانیوں کی نئی منزلیں طے کر رہا ہے۔ فی الحال مدھیہ پردیش کی واحد مرکزی یونیورسٹی ہے جس میں اردو میں اعلیٰ تعلیم وتحقیق کا بہترین نظم ہے اور اسے پوسٹ گریجویٹ اور تحقیق کے اعلیٰ مرکز کے طور پر جانا جاتا ہے۔

سمینار: تعارف / مقاصد

اہل نظر کا دعویٰ ہے کہ ہر ادب اپنے سماج کا آئینہ ہوتا ہے۔یعنی ادب اور ادیب دونوں براہ راست سماجی تعامل کا مظہر ہوتے ہیں۔جیسے حالات ہوں گے اسی طرح کا ادب تخلیق پائے گا۔ادبی تاریخ کے بعض حصے اس کے شاہد بھی ہیں کہ غیر معمولی حالات اعلیٰ ادب کا پیش خیمہ ثابت ہوئے۔خارجی حالات ادیب کے تخلیقی سرچشموں اور شعور کو جھنجھوڑتے اور مہمیز کرتے ہیں۔نتیجتاً وہ اپنے جذبات ومحسوسات کو تجربات کی روشنی میں لفظوں کا جامہ پہناتا ہے اور اپنے قارئین کا بہترین شارح ہونے کا فریضہ انجام دیتا ہے۔ظاہر ہے صرف خارجی عوامل یا محرک کسی کو بڑا تخلیق کار نہیں بناتے بلکہ بڑا تخلیق کار لفظوں کے خلاقانہ استعمال پر زیادہ قدرت رکھتا ہے۔اردو ادب کی تخلیقی تاریخ اس حوالے سے بڑی ثروت مند ہے۔اس لیے کسی بھی صنف کے تخلیق کاروں کی درجہ بندی اور فہرست سازی میں اولیت کا مسئلہ ہمیشہ متنازع فیہ رہا ہے۔غالبؔ بڑے ہیں کہ میرؔ، انیسؔ یا دبیرؔ، انتظار حسین یا قرۃ العین حیدر۔بہرکیف یہ بحث آج بھی اپنی معنویت برقرار رکھے ہوئے ہے، کیوں کہ وقت اور حالات کی تبدیلی کے ساتھ ساتھ ہیئت کی تبدیلی، نئے الفاظ کی تلاش، نئے پیکر اور نئی علامتوں کی کھوج کا آغاز ہوتا ہے اور تنقید کے نئے پیمانے بھی وضع ہوتے ہیں۔بیسویں صدی کے نصف آخر میں ادبی تجربات کے جو نت نئے سلسلے شروع ہوئے تھے آج بھی وہی سلسلے ادبی منظر نامے کی تخلیق وتشکیل کر رہے ہیں۔فرد یا سماج کی نفی یا ان

सेमीनार से मुताल्लिक मौज़ूआत :

[A] मुख़ातलिक अस्नाफ़ का मंज़रनामा।

1. ग़ज़ल
2. नज़्म
3. अफ़साना
4. नाविल
5. तनकीद
6. ड्रामा
7. गैर अफ़सानवी नस्र वग़ैरह

[B] 21 वीं सदी के अहम तख़लीक़ कार।

1. ग़ज़लगो
2. नज़्मगो
3. अफ़साना निगार
4. नाविल निगार
5. तनकीद निगार
6. ड्रामा निगार
7. गैर अफ़सानवी नस्र निगार वग़ैरह

[C] मुख्तलिफ मैलानात-ओ-रुझानात का मौजूदा मंज़रनामा

सेमीनार के खुसूसी पहलू :
कलीदी खुतबा, माहरीन का खिताब और मक़ालात की पेशकश
मक़ालात भेजने से मुताल्लिक हिदायत

अहम तारीखें

सेमीनार की तारीख	: 22-23 मार्च 2018
तलखीस (Abstract) भेजने की आखरी तारीख	: 05 मार्च 2018
तलखीस की मंज़ूरी की इत्तेला	: 10 मार्च 2018
पूरा मक़ाला भेजने की आखरी तारीख	: 12 मार्च 2018

(पूरे मक़ाले के बग़ैर सेमीनार में रजिस्ट्रेशन मुमकिन नहीं होगा)

तलख़ीस (Abstract) 200 से 300 अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल होना चाहिए।
पूरा मक़ाला 2000 से 3000 अल्फ़ाज पर मुश्तमिल होना चाहिए।
मक़ाला पेश करने के लिए सिर्फ 10 मिनिट का वक़्त दिया जाएगा।
सभी तलखीस-ओ-मक़ालात प्दचंहम में नूरी नसतालीक़ यॉ वतक में जमील नूरी नसतालीक़ फोन्ट 16 Point में होना चाहिए।
सभी तल्खीस-ओ-मक़ालात इन ई-मेल पर भेजें।
urduseminar18@gmail.com / shaheemjnu@gmail.com

रजिस्ट्रेशन फीस

असातज़ा	: रु. 1000/-
तलबा	: रु. 500/-

यूनिवर्सिटी की वेब साइट www. dhsgsu.ac.in से रजिस्ट्रेशन फार्म ओर ब्रोशर डाउनलाड किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन फ़ीस की अदाएगी रजिस्ट्रार डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म. प्र. के नाम ड्राफ्ट के जरिए करनी होगी। इफ़्तेताही तक़रीब से एक घन्टा कब्ल (On Spot) भी रजिस्ट्रेशन करवाया जा सकता है। सेमीनार में मक़ाला पेश करने वालों को किसी तरह का कोई सफर खर्च (T.A./D.A.) नहीं दिया जाएगा।

Contact Dr. Abu Shaheem Khan 7354966719, Dr. Md. Afzal Hussain 8989646325